पाठ - 2

मध्यकालीन विश्व

मध्य युग में यूरोप :- मध्य काल को मध्य युग भी कहते हैं, क्योंकि जैसाकि नाम से जाहिर है । यह वह काल हैं जो प्राचीन काल से पहले आता हैं । मध्य काल की उपलब्धियों और गौरव आधुनिक काल की दिशा में महत्वपूर्ण कदम भी है । यह एक मायने में आधुनिक काल की जड़ 'मध्य कालीनता' में हैं । इस्लामी जगत के लिये यह एक ऐसा काल था जब एक सभ्यता का जन्म हुआ और वह परवान चढ और अपनी बुलन्दीयों पर पहुँचा । भारत में मध्यकाल मेलजोल और सश्लेषण का युग था । यूरोप में मध्य काल की शुरुआत में भौतिक और सास्कृतिक उपलब्धियाँ थोड़ी कम थी । लेकिन यूरोपवासियों ने जीवन स्तर में बहुत सुधार, ज्ञान -विज्ञान की नई संस्थाए और चिंतन की नई प्रणालियाँ विकसित की और वे साहित्य एव कला में बहुत उन्नत स्तर पर पहुचें | दरअसल जो नये विचार उभरकर आए उन्होंने न सिर्फ यूरोप बल्कि शेष दुनिया को भी प्रभावित किया ।

रोमन साम्राज्य का पतन:- रोमन साम्राज्य पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों में बट चुका था । पश्चिम प्रान्तों की राजधानी रोम था | जबकि कुस्तुन्तुनिया पूर्वी प्रान्तों की राजधानी बना । रोमन सम्राट कांस्टेटाइन ने 330 ईस्वी में बेजंतिया के पुराने यूनानी शहर में पूर्वी क्षेत्रों की नई राजधानी स्थापित की थी । नई राजधानी उसके नाम पर कुस्तुनतुनिया के रूप में जानी गई । पश्चिमी हिस्सों में साम्राज्य का पतन व पूर्वी हिस्से में रोमन साम्राज्य टिका रहा, जो पूर्वी रोमन साम्राज्य या बैजंतिया साम्राज्य के नाम से जाना गया । गांथ, वंडल, विसीगाँथ आर फ्रेंक जैसे विभिन्न जर्मनिक कबीलों के हमलों के बाद पश्चिम में रोमन साम्राज्य ढह गया । 476 ईस्वी. में रोमन का तख्ता पलट कर इन हमलावरो ने अपने अलग - अलग उत्तरवर्ती राज्य स्थापित कर लिए । रोमन और जर्मनिक समाज एक दूसरे से घुलमिल गए और एक नई किस्म के समाज का जन्म हुआ । इस समाज की संस्थाऐ और व्यवस्थाऐ रोमन व जर्मनिक से भिन्न थी । इस नये समाज की सबसे महत्वपूर्ण संस्था सामंतवाद थी ।

सामंतवाद : राजनीतिक, सैन्य, सामाजिक, आर्थिक पहलू :- पश्चिम रोमन साम्राज्य के विघटन जर्मन लोगों ने एक बड़ा साम्राज्य स्थापित किया। यह कैरोलिंगयाई साम्राज्य था । जो नवीं सदी के मध्य में बाहरी हमलों की वजह से बिखरने लगा। इससे हुई राजनितिक उथल-पुथल से एक नई किस्म की राजनितिक व्यवस्था का जन्म हुआ । जिसे सामंतवाद कहते हैं । सामंतवाद राजनीतिक प्रभुसत्ता का एक श्रेणीबद्ध संगठन था । इस व्यवस्था में राजा - बड़े सामंत /ड्यूक /अर्ल - छोटे सामंत/बैरन - नाइट सिर्फ सामंत राजा से अपना अधिकार पातें थे । वे अपने - अपने क्षेत्रों में सर्वशक्तिमान होते थे। रोमन साम्राज्य में सारी शक्तियां राजा के हाथ में केन्द्रित थी | इस व्यवस्था में राजनीतिक सत्ता व्यापक रूप से विकेन्द्रित थी । हर स्तर पर सामंत अपने से उपर वाले के प्रति निष्ठा जताते थे और उससे प्राधिकार पाते थे। अपने से बड़े के मातहत जागीरदार कहलाते थे । सामंत मातहतों के बीच सम्बन्ध निजी प्रकृति था । दोनों के बीच रिश्ता बनाने के लिए एक लम्बा -चौड़ा अनुष्ठान करवाया जाता था जिसमे मातहत जागीरदार जिन्दगी भर तक सामंत की सेवा करने की कसमें खाता था, इसके साथ ही वह सामंत का संरक्षण कबूल करता था । संरक्षण तहत् सामंत को जब भी जरूरत पड़ती मातहत को उसे एक ख़ास संख्या में सैनिको की

व्यवस्था करनी होती थी । इसके बदले में सामंत उसे अनुदान देता था । जो की आम तौर पर मातहत और उसके सैनिकों के भरण पोषण के लिए जमीनें होती थी । इस तरह के अनुदान को फीफ या यूडम कहते थे । इसी से युडलिक सामंतवाद विकसित हुआ । यही सामंतवाद का सैन्य पहलू है । इन्हें राज्य भी चुनौती नही दे सकता था । राजनीतिक हलचल और अशांति के दौर में भी किसानों ने सामंतो की तरह संरक्षण पाना चाहा । यह एक आर्थिक संकट का दौर था । किसानों के पास आम तौर पर कम संसाधन थे । उनके पास खेत नही थे और न ही खेती बाड़ी के पर्याप्त संसाधन थे । उन्हें प्राप्त करने के लिये अपनी आजादी गिरवी रखी और जमीन से बंध गये । और बाद में ऐसे कानून का प्रावधान किए गए जो किसानों को जमीन से हटने, या सामंतो को कही और जाने से रोकते थे । मुक्त किसानों ने संरक्षण मांगा तब उन्हें अपनी आजादी खोनी पड़ी । आजादी खत्म होने से किसानों को धमकाते और सताते थे । जमीन से बंधे और सामन्तों को पूरी तरह अधीन मध्य कालीन यूरोप के इन आश्रितों किसानों को भूदास कहा जाता था । पूरी तरह भूदासों का शोषण व इसके द्वारा सम्पति का बड़ा हिस्सा शोषण के जरिए सृजित किया गया था ।

सामंतो के नियंत्रण वाली समूची जमीन मेनर (गढी) कहलाती थी । मेनर तीन हिस्सों में बटी होती थी । एक हिस्सा डिमेंन कहलाता था । जायदाद का यह हिस्सा सामंत के सीधे प्रबन्धन के तहत होता था । मेनर के दूसरे हिस्से में भूदासों की जोत थी । इसके अलावा मैदानी हिस्से थे | जिन पर अपने पशुओं को चराने का अधिकार सबको प्राप्त था । भूदासों के जोतों पर अधिकार रखने वाले को सामंत के मेनर काश्तकार माना जाता था । काश्तकार सामंत को लगान श्रम सेवा के रूप में अदा करते थे । श्रम सेवा हफ्ते में कुछ ख़ास दिन डिमेंन पर काम करना पड़ता था । खेती के दिनों में भूदास को हल जोतना, बुआई, कटाई इस तरह की अवैतनिक सेवाओं में भवन निर्माण और ईधन के लिए लकड़ियाँ काटने जैसे कष्टसाध्य कार्य शामिल थे । रोजमर्रा की जरुरतों की करीब करीब तमाम जैसे, लौहे के सामान बनाने के लिए भट्टी, गेहूं पीसने के लिए चक्की, रोटी बनाने के लिए तंदूर और शराब बनाने के लिए अंगूर पेरने के कोल्हू मौजूद थे । किसानों को इन उपकरणों के इस्तेमाल करने के लिए मजबूर किया जाता था । तथा सामंत इसका शुल्क मनमाने ढंग से वसूल करते थे ।

सामंती अर्थव्यवस्था में परिवर्तन : खुशहाली व संकट :- दसवीं सदी के दौरान उत्पादन की सामंती व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए । 11 वीं और 12 वीं सदी में यह व्यवस्था पूरे यूरोप में फलती - फूलती रही । कृषि तकनीक में सुधार के कारण कृषि उपज में इजाफ़ा हुआ । रोमन काल से इस्तेमाल में आने वाले हल्के हल 'अरेट्रम' की जगह एक नये हल ने ले ली जो 'चैरय' कहलाता था । नयस हल भारी था, यह पहियों से युक्त था । उसे बैलों का दल खीचता था । खेती दो भूखंडों के तरीकों पर आधारित थी | जिसमें जमीन के एक हिस्से पर खेती तथा दूसरा हिस्सा परती छोड़ दिया जाता था । बाद में तीन भूखंडों का तरीका अपनाया गया, जिसमें एक तिहाई जमीन परती छोड़ दी जाती, एक तिहाई जमीन पर शरद फसल उपजाई जाती और बाकी पर बसंत फसल लगाई जाती । जमीन के सिर्फ तीसरे हिस्से को परती छोड़ देने से फसल बोई गई जमीन का क्षेत्र काफ़ी बढ़ गया । इससें उपज में कई गुणा बढोत्तरी हुई । कृषि में विस्तार के साथ ही शहरों का विकास, स्थानीय हाट, सड़क निर्माण, नदी और समुंद्री रास्तों का व्यापार के लिए उपयोग, वस्त्र निर्माण उद्योग, कारखाना, दस्तकारों के संघ आदि से मध्य कालीन शहरों का महत्व बढ़ गया । अत: सामंती सम्बन्ध ग्रामीण इलाकों से तोड़ने वाले महत्वपूर्ण कारक बने ।

आर्थिक प्रगति का रुझान :- मेनर को अब डिमेन के एक बड़े हिस्से छोटी-छोटी जोतों में बांटकर किसानों को भाड़े पर दे दिया गया । किसानों के श्रम वसूलने का तरीका भी खत्म हो गया । इसलिए सामंत अब श्रम सेवा के बजाय

मुद्रा या जींस सामंती लगान की मांग करने लगे । श्रम सेवा में गिरावट और कृषि में प्रौधोगिकी की गातिरुद्ता ने अन्य कारकों के साथ मिलकर कृषि उपज में जबरदस्त गिरावट की । अनाज की किल्लत व अकाल का सिलसिला शुरू हो गया । प्लेग की महामारी इन सब कारणों से अर्थव्यवस्था में एक साथ गिरावट आई । लेकिन यूरोप इस संकट से आसानी से उबर गया । 1450 ईस्वी. के करीब अर्थव्यवस्था में बहाली का सिलसिला शुरू हो गया । दरसल दसवीं सदी के एक अरब भूगोलशास्त्री ने उन्हें स्थूल प्रकृति, अप्रिय तौर तरीके और निम्न बुद्धी वालों की संज्ञा दी गई थी । दसवीं सदी के बाद प्राथमिक शिक्षा का प्रचार व विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई और उनका विस्तार हुआ । ज्ञान व विद्या क्रमशः धर्म निरपेक्ष होती गई ।

मध्य काल में अरब सभ्यता :- अरब रेगिस्तान का एक प्रायाद्वीप है । इस्लाम के उदय होने से पहले ज्यादातर अरब बद्दु जाति के थे । अर्थात् ऊंट पर घूमने वाले चरवाहे थे । उनकी आजीविका का मुख्य स्त्रोत पशुपालन और नखलिस्तानो में उगने वालें खजूर थे । शिल्प उत्पादन काफी सीमित था । व्यापार भी धीमा था और शहरीकरण भी बहुत ही कम अरब के दो पड़ोसी साम्राज्यों - रोमन साम्राज्य और फ़ारसी सामाज्य के बीच जंग छिड़ी थी । इन जंगों के कारण अरब अफ्रीका और एशिया के बीच व्यापार के लिए आने जाने वाले कारवों का सुरक्षित रास्ता बन गया । कुछ प्रमुख व्यापार मार्गो पर संधिस्थल महत्वपूर्ण शहर मक्का था । काबा के कारण मक्का को एक स्थानीय धार्मिक महत्व हासिल था । मक्का काबा अरब कबीलों के लिए एक पूज्य स्थल था । इस धर्म स्थल पर कुरेश कबीलों का नियंत्रण था । इस्लाम के संस्थापक हजरत मौहम्मद का जन्म करीब 570 ई. में कुरेश कबीले में हुआ था | इस्लाम के संस्थापक हजरत मोहम्मद के माता - पिता का निधन उसके बचपन में ही हो गया । इनकी परवरिश उनके चाचा ने की, बड़े होकर एक सौदागर बने जिन्होंने एक धनी विधवा खदीजा के लिए व्यापार किया । खदीजा से शादी कर ली । करीब 610 ई. में हजरत मोहम्मद एक धार्मिक अनुभूति में उन्होंने एक आवाज सुनी जो कह रही थी कि अल्लाह एक हैं, और उसके शिवाय कोई भगवान नहीं हैं । इस तरह बहुईश्वरवाद से एकेश्वरवाद का जन्म हुआ । यह नया धर्म इस्लाम के नाम से जाना गया । हरजत मोहम्मद उसके पैगम्बर माने गए । 622 ईस्वी. में हरजत मोहम्मद अपने अनुयाइयों के साथ यसरिब चले गए । इसे हिजरत कहते हैं । हजरत के इस साल को इस्लामी कैलेंडर का पहला साल माना जाता हैं । हजरत मोहम्मद ने इस शहर का नाम मदीना रखा । हजरत मोहम्मद 630 ईस्वी. में कुरैश को परास्त कर मक्का में प्रवेश किया । काबा इस्लाम धर्म का मुख्यस्थल बन गया ।

इस्लाम का अर्थ है कि धर्म की अधीनता और पालन अर्थात् ईश्वर के प्रति सम्पूर्ण समर्पण । इनके अनुयायी मुस्लिम या मुसलमान कहलाए । कुरान मुसलमानों का पवित्र ग्रंथ हैं । उनके संदेश थे कि सदाचार दया - करुणा का जीवन बिताना, निश्चित समय पर नमाज और रोजा जैसे धार्मिक अनुष्ठान करना, हज यात्रा करना, कुरान का पाठ करना शामिल हैं ।

इस्लाम का प्रसार :- हरजत मोहम्मद की मृत्यु के बाद उनके निकटतम अनुयाइयों ने उनके ससुर अबु बक्र को खलीफा बनाया गया । अबु बक्र के निधन के बाद उमर खलीफा बने । जल्द ही अरबों ने पूरे सीरिया पर और एन्तियोक, दमिश्क तथा यरूशलम के प्रमुख शहरों पर कब्जा किया । 651 ईस्वी. में पूरे फारस व 711 ई. में समूचे स्पेन को जीत लिया । उमर के बाद उस्मान खलीफ़ा बने उनकी हत्या कर दी गई । और पैगम्बर के चचेरे भाई एव दामाद अली को खलीफा बनाया गया । अली की भी हत्या कर दी गई और इनके अनुयाईयों ने अलग पंथ चलाया जिसे शिया कहते हैं, बाकि मुसलमान सभी सुन्नी कहलाए । अली की मृत्यु के बाद 950 ई. तक उमैया वंश शासन

करता रहा तथा इसके पतन के बाद अब्बासियों ने सत्ता संभाली । अब्बासियों ने अपनी राजधानी बगदाद को बनाया । मंगोलों ने 1258 में बगदाद को नष्ट कर दिया । इसने मुस्लिम साम्राज्य पर अरब शासन समाप्त कर दिया ।

इस्लामी सभ्यता की सांस्कृतिक और बौद्धिक उपलब्धियाँ :- हजरत मोहम्मद के समय से लेकर करीब 1500 ई. तक इस्लामी संस्कृति और समाज उल्लेखनीय रूप से सर्वदेशीय और गतिशील रहे । वे विभिन्न संस्कृतियों के सम्पर्क में आए और उनकी विशेषताओं को ग्रहण किया ।

उन्होंने यहूदी और ईसाई कवियों को भी संरक्षण दिया । धर्म के क्षेत्र में दो किस्म के लोग थे । उलेमा और सूफ़ी, चिकित्सा क्षेत्र में पश्चिम में अबिसिना के नाम से मशहूर इब्नसीना ने तपेदिक की संक्रामक प्रकृति की खोज की । पश्चिम में राजेज के नाम से मशहूर अल राजी मध्यकालीन विश्व के महानतम नैदानिक चिकित्सक थे । फारस, सीरिया, और मिश्र के महत्वपूर्ण शहरों में आधुनिक पद्धति पर संगठित कम से कम 34 अस्पताल थे । रसायन क्षेत्र में अन्य चीजों के आलावा सोड़ा के कार्बोनेट फिटकरी, शोरा, नमक के तेजाब, नाट्रिक अम्ल और सिल्वर नाइट्रेड जैसे अनेक रसायनों की खोज की । अंक गणित, रेखागणित और त्रिकोंमिति के क्षेत्र में महान प्रगति की ।

मध्यकालीन भारतीय सभ्यता :- उत्तर भारत में पाल, परिहार और राष्ट्रकूट के तीन प्रमुख राज्य थे । दक्षिण में देश के प्रायद्वीप हिस्सों में चोल वंश का प्रभुत्व था । पश्चिम व मध्य एशिया की विजय के बाद महमूद गजनी ने भारत पर आक्रमणों की शुरुआत सितम्बर 1000 ईस्वी. में हुई । इसके बाद उसने पंजाब, कश्मीर और पूर्वी राजस्थान और गंगा के उर्वर मैदानी इलाकों में हमले किए ।

राजनीतिक क्रम :- महमूद के हमलों के बाद तुर्क आए उन्होंने दिल्ली को राजधानी बनाया तथा वे सुल्तान नाम से जाने जाते थे । और उनका साम्राज्य दिल्ली सल्लतनत कहलाया । खिलजी और तुगलक जैसे ताकतवर राजवंश एक - एक कर आए ।

राजनीतिक संस्थाए :- दिल्ली के सुल्तानों और मुगलों ने प्रशासनिक व्यवस्था में कुछ नई चीजों को जोड़ी | दिल्ली सल्लतन में सैनिक कमांडरो को 'इकता' दिया जाता था । 'इकता' क्षेत्रीय इकाई हैं । सुल्तान जब भी आदेश करेगा, वह अपने सैनिको से सैन्य सहायता करेगा । मुगलों की प्रणाली ज्यादा व्यापक नही थी । राजस्व और भूमि लगान पर उनका नियन्त्रण ज्यादा गहरा था । उन्होंने मनसबदार बहाल किये जो वास्तव में ओहदा या रुतबा होता था, जो एक अधिकारी की योग्यता व उसके अधीन सैनिकों के आधार पर तय होता था ।

अर्थव्यवस्था :- अब राज्य और किसान या जागीरदारों जैसे भूस्वामियों वर्ग के साथ कोई मनमाना सम्बन्ध नही रहा । जमीन की पैमाइश की गई और उस पर रकबे के मुताबिक भू -राजस्व निर्धारित किया गया । बाज़ार की तत्कालीन कीमत के आधार पर उत्पादन में राज्य के हिस्से का नकद मूल्य आँका गया, इसी अनुरूप नकद के रूप में राजस्व तय किया गया । खेती को बढ़ावा देना, उधमी किसानों को प्रोत्साहित करना । राज्य ने फसल नष्ट होने पर कर्ज दिए और राजस्व वसूली में राहत दिया । शहरों से सड़कों के द्वारा केन्द्रों को जोड़ा गया । दिल्ली, आगरा, लाहोर, अहमदाबाद, सूरत और कैम्बे जैसे शहरों का महत्व बढ़ा । पंजाब से पश्चिम और मध्य एशिया के बाजारों में माल भेजे जाते थे । सेठ, बोहरा, मोदी, लम्बी दूरी का व्यापार करते थे । जो खासकर खाद्य पदार्थो का व्यापार करते थे । सरार्फ या श्राफ मुद्रा बदलने वाले थे और हुडिया जारी करते थे ।

सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन :- इसमे जाति व्यवस्था और ब्राह्मणों के एकाधिकार पर सवालिया निशान लगाए । रामानंद, कबीर, रविदास, मीरा बाई, गुरुनानक, तुकाराम, और चैतन्य जैसे भक्ति आन्दोलन के संतो ने जनमानस पर गहरा प्रभाव डाला जो आज भी जारी हैं । गुरुनानक के भक्तों का पंथ सिक्ख धर्म कहलाया । सूफ़ी, खासकर चिश्ती सिलसिले के सूफ़ी राज-पाट पार्थिव और भौतिक चीजों से अलग रह कर बेहद सादगी की जिन्दगी बिताई । सूफ़ी व भक्ति दोनों दार्शनिक विचारों का खूब आदान - प्रदान किया जो हिन्दू और मुसलमानों के बीच सेतु का काम किया । तुलसीदास का राम चरित्र मानस और मलिक मोहम्मद जायसी का पदमावत व बंगाली में अलाल की रचना, मराठी में एकनाथ और तुकाराम की रचनाएँ इसी काल में लोकप्रिय हुई । कुतुबमीनार, अलाई दरवाजा और गियासुदींन तुगलक के मकबरे जैसे तुगलक कालीन विभिन्न स्मारक दिल्ली सल्लतनत के काल की वास्तुकला के शानदार उदाहरण हैं । पांच महल, बीरबल का महल और इबादतखाना जैसे फतेहपुर सीकरी के स्मारक, दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा सिकन्दरा में अकबर का मकबरा, आगरा का इत्माददुदोला का मकबरा और बेशक ताजमहल मुग़ल वास्तुकला की शानदार मिसाले हैं । इनकी हिन्द -इस्लामी शैली के आत्मसात करने की प्रक्रिया गहरी है ।